

आयोजित हुई कई साहित्यिक प्रतियोगिताएं

साहित्योत्सव का अंतिम दिन रहा बच्चों की सृजनात्मकता के नाम

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों एवं युवा लेखकों के नाम रहा। बच्चों के लिए शनिवार को विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों के अंतर्गत कविता-कहानी लेखन प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, बाल साहित्यकारों द्वारा बाल कहानियां सुनाने जैसे कई आयोजन किए गए।

बच्चों के लिए आयोजित कहानी एवं कविता प्रतियोगिता का विषय पर्यावरण पर केंद्रित था, जिसे जूनियर और सीनियर वर्गों में बांटा गया था। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से आए लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता अंग्रेजी एवं हिंदी भाषा में आयोजित की गई थी। प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार बच्चों को दिए गए। बच्चों को दीपा अग्रवाल एवं मधु पंत ने अंग्रेजी एवं हिंदी में रोचक कहानियां भी सुनाईं। बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा



लिया। भारत में प्रकाशन की स्थिति पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद शर्मा ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने साहित्यिक पुस्तकों की घटती बिक्री पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा कई कारणों से हो रहा है लेकिन प्रमुख कारण है कि हम विद्यालय स्तर पर बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि विकसित नहीं कर पा रहे हैं।

पुस्तकों को आम जन जीवन से जोड़ने की चुनौती आज प्रमुख है। इसके लिए लेखकों को भी आगे

आकर पाठकों को खोजना होगा। एक अन्य कारण में उन्होंने पुस्तकों के मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए। उन्होंने प्रकाशकों से अनुरोध किया कि वे इसे पुस्तक प्रकाशन को समाज कल्याण की दृष्टि से देखें। सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी लगभग 200 नई पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित करती है और लगभग 300 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण करती है, लेकिन हम भी पुस्तकों की बिक्री में लगातार गिरावट

देख रहे हैं। हमें इस चुनौती से मिलकर लड़ना होगा। अगला सत्र निर्मल कांति भट्टाचार्य की अध्यक्षता में संपन्न हुआ और उसमें कार्तिका वी.के., अदिति माहेश्वरी, प्रीति शिनाय और पारमिता सत्यथी ने भाग लिया। कार्तिका वी.के. ने कथा साहित्य की वर्तमान प्रकाशन स्थिति पर बात करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी की प्राथमिकता में अब किताबें नहीं हैं। हमें नए लेखकों के साथ-साथ नए पाठकों की भी जरूरत है और इसके लिए दोनों के बीच एक संवाद जरूरी है। उन्होंने अनुवाद की बढ़ती संख्या पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि अब यह केवल अंग्रेजी से नहीं बल्कि कई क्षेत्रीय भाषाओं से किया जा रहा है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि इधर के वर्षों में अच्छा साहित्य विभिन्न भाषाभाषी क्षेत्रों से आया है। वाणी प्रकाशन का प्रतिनिधित्व कर रही अदिति माहेश्वरी ने कहा कि दूसरे देशों की तरह हमारे देश में भी इस क्षेत्र में सरकारी सहयोग की आवश्यकता है।

साहित्योत्सव का अंतिम दिन रहा सृजनात्मकता के नाम



जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव का अंतिम दिन बच्चों व युवा लेखकों के नाम रहा। इस दौरान बच्चों के लिए विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन भी हुआ।

‘आओ कहानी बुनें’ सत्र की शुरुआत बच्चों के लिए पर्यावरण विषय पर आयोजित कहानी व कविता प्रतियोगिता हुई, जिसे जूनियर और सीनियर वर्गों में बांटा गया। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से आए करीब 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार बच्चों को दिए गए। वहीं, बाल साहित्यकार दीपा अग्रवाल व मधु पंत ने बच्चों को अंग्रेजी व हिंदी में रोचक कहानियां भी सुनाई।

दूसरे सत्र में भारत में प्रकाशन की स्थिति पर आयोजित परिचर्चा का शुभारंभ राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद शर्मा ने किया। उन्होंने साहित्यिक पुस्तकों की घटती बिक्री पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा कई कारणों से हो रहा है, लेकिन प्रमुख कारण है कि हम विद्यालय स्तर पर बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि विकसित नहीं कर पा रहे हैं। पुस्तकों को आम जन जीवन से जोड़ने की चुनौती आज प्रमुख है। इसके लिए लेखकों को भी आगे आकर पाठकों को खोजना होगा। वहीं, लेखक निर्मलकांति भट्टाचारजी ने कहा कि पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन में भी यदि साहित्यिक प्रकाशकों से सहयोग लिया जाए तो इस क्षेत्र में आ रही गिरावट को रोका जा सकता है।

उन्होंने भारतीय भाषाओं के अनुवाद को ज्यादा प्रकाशित करने की अपील की।

साहित्योत्सव का समापन नई फसल शीर्षक से अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मेलन से हुआ। इसमें प्रख्यात कन्नड़ लेखक सिद्धलिङ्गैया व असमिया के प्रख्यात लेखक ध्रुव ज्योति बोरा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर केपी रामनुन्नी, गौरहरि दास, रामकुमार मुखोपाध्याय, प्रकाश भातब्रेकर एवं शीन काफ निजाम, साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराम, कार्तिका वीके, अदिति माहेश्वरी, प्रीति शिर्नॉय, ओडिया लेखिका पारमिता सत्पथी, कवि अरुण कमल, आलोक श्रीवास्तव, अरुंधति सुब्रमण्यम आदि ने भी अपने विचार रखे।

रवींद्र भवन में आयोजित साहित्योत्सव में बच्चों को मनोरंजक कहानी सुनाती लेखिका मधु पंत

● सौजन्य- साहित्य अकादमी।

چھ روزہ ساہتیہ اُتسو 2020 کا آغاز

معروف ہندی ادیبہ منو بھنڈاری نے اکادمی نمائش کا افتتاح کیا



صدارت چندرکانت مرادی سنگھ نے کی جن میں جے۔ سوتے آئی مول، مکتیور کینہرائی، مرتنارک کے۔ مارن، روپ لال لہو اور گورا نگ رینے آئی مول، دیما سا، گارو اور لہو زبانوں کی نمائندگی کی۔ ان شاعروں نے پہلے اصل زبان میں شاعری پیش کی پھر اس کا ہندی/ انگریزی ترجمہ سنایا۔ منگل کو ساہتیہ اکادمی کا سالانہ جلسہ انعامات منعقد ہوگا جس میں مہمان خصوصی کی حیثیت سے معروف نغمہ نگار اور فلم ڈائریکٹر گلزار شریتر کریں گے۔ یہ پروگرام شام ساڑھے پانچ بجے کافی آؤٹریمر میں منعقد ہوگا۔

میں روایتی علم کے خزانے بھرے پڑے ہیں۔ ان کے اس علمی ذخائر کو محفوظ رکھنا ہم سب کی ذمہ داری ہے تاکہ یہ لمبے وقت تک زندہ رہ سکیں۔ اپنی افتتاحی تقریر میں پروفیسر انوتیا ای نے کہا کہ آدیوای زبانی ادب، لوک ادب کی روایت کی ہی ایک کڑی ہے، جس میں ہماری روزمرہ زندگی ہندی کی دھارا کی طرح رواں ہوتا ہے۔ ہمیں سماجی اور شمولیت کو ساتھ ساتھ لے کر چلنا چاہیے۔ زبانی ادب کو بھی مرنے نہیں دینا چاہیے۔ اسے اسکول کے نصاب میں شامل کرنا چاہیے کالفرنس کے دوسرے سیشن 'شعری نعت' کی

کے علاوہ مختلف زبانوں کے ادیب موجود تھے۔ دوپہر ڈھائی بجے سر روزہ آل انڈیا آدیوای ادیب کالفرنس کا آغاز ہوا جس کی افتتاح معروف ادیبہ انوتیا ای نے کیا۔ کالفرنس کے آغاز میں ساہتیہ اکادمی کے صدر ڈاکٹر چندر شیکھر کمار نے شرکا کا کچھ اور کتابیں دے کر استقبال کیا۔ اپنے خیر مقدمی کلمات میں اکادمی کے سکریٹری ڈاکٹر کے سری نواس راؤ نے زبان کو داغ کا آئینہ مانتے ہوئے کہا کہ آدیوای زبانوں میں لوک سائنس کی بیش بہا اشیا موجود ہیں جن میں ہمارا ماضی پوشیدہ ہے۔ آدیوای ادب

کتابیں اور 245 کتابوں کے نئے ایڈیشن شامل ہیں۔ انھوں نے یہ بھی بتایا کہ پچھلے سال کل 715 ادبی پروگراموں کا انعقاد عمل میں آیا جن میں صدی تقریبات، سمینار، سمپوزیم، ورکشاپ وغیرہ شامل ہیں۔ محترمہ منو بھنڈاری نے خرابی صحت کی وجہ سے تقریر نہیں کی مگر اپنی موجودگی سے ادیبوں کی حوصلہ افزائی کی۔ افتتاح کے بعد شمالی ہند میوزیکل انسٹرومنٹ کی مہترم آوازوں کے درمیان شمع روشن کی گئی۔ اس موقع پر ساہتیہ اکادمی کی 24 زبانوں کے کنوینر اور دیگر ممبران

(محمد عمران)
نئی دہلی، 24 فروری۔ ساہتیہ اُتسو 2020 کا آغاز سال 2019 کی اکادمی سرگرمیوں کی نمائش سے ہوا جس کا افتتاح ہندی کی معروف ادیبہ منو بھنڈاری نے کیا۔ افتتاح سے قبل اکادمی کے صدر چندر شیکھر کمار نے ان کا خیر مقدم کیا اور اکادمی کے سکریٹری ڈاکٹر کے سری نواس راؤ نے خیر مقدمی کلمات سے نوازا۔ ڈاکٹر راؤ نے بتایا کہ ساہتیہ اکادمی نے سال 2019 میں 24 ہندوستانی زبانوں میں 484 کتابیں شائع کیں جن میں 239 نئی

اردو میں سہ ماہیہ اکادمی کا ترجمہ ایوارڈ 2019 ممتاز مترجم اسلم مرزا کو سہ ماہیہ اکادمی کی 23 ہندوستانی زبانوں کے ترجمہ ایوارڈ کا اعلان

ایوارڈ، ڈاکٹر عصمت جاوید لٹریچر ایوارڈ وغیرہ سے نوازا جا چکا ہے۔

دیگر انعام یافتہ مترجمین میں تین ہندو پادھیائے (بنگالی)، سوسان ڈیٹیل (انگریزی)، آلوک گپتا (ہندی)، رتن لال جوہر (شمیری)، سنی پراپچے (مراٹھی)، پریم پرکاش (بجالی)، ڈھولن راہی (سندی)، پی ستیہ دتی (تیلگو) وغیرہ کے نام شامل ہیں۔ کنز میں ایوارڈ کا اعلان بعد میں کیا جائے گا۔

سہ ماہیہ اکادمی ہر سال 24 زبانوں کے مترجمین کو ایوارڈ کے لیے منتخب کرتی ہے۔ یہ ایوارڈ پچاس ہزار روپے نقد اور توصیف نامے پر مشتمل ہے۔ اس سال کے ایوارڈ کے لیے 1 جنوری 2013 سے 31 دسمبر 2017 کے دوران شائع تراجم زیر غور آئیں۔ یہ انعامات سال رواں کے دوران سہ ماہیہ اکادمی کی ایک پُر وقار تقریب میں دیے جائیں گے۔



اور 'مور پٹھ' (ترجمہ) اہم ہیں۔ اسلم مرزا نے متعدد سمیناروں اور کانفرنسوں میں شرکت کی

نئی دہلی، 24 فروری (پریس ریلیز) سہ ماہیہ اکادمی کے صدر ڈاکٹر چندر شیکھر کمار کی صدارت میں آج سہ ماہیہ اکادمی کی مجلس انتظامیہ کی میٹنگ ہوئی جس میں 23 ہندوستانی زبانوں کے سہ ماہیہ اکادمی ترجمہ ایوارڈ 2019 کے لیے کتابوں کے انتخاب کو منظوری دی گئی۔ اردو میں ترجمہ کے لیے ممتاز مترجم اسلم مرزا کو ان کے بہترین ترجمہ 'مور پٹھ' کے لیے منتخب کیا گیا جو پر شانت اسرارے کی مراٹھی شعری مجموعہ 'پتھ' (مہاراشٹر) سے ہے۔ اب تک ان کی تیرہ کتابیں منظر عام پر آچکی ہیں جن میں 'آئینہ معنی نما'، 'گیلے چوں کی مسکان' (شعری مجموعہ)، 'ہم جزیروں میں رہتے ہیں' (ترجمہ)، 'کلنت' (ترجمہ)، 'عطر گل مہتاب'، 'گل دستہ خوش باش'، 'سلاطین دکن کے عہد میں شادیاں'، 'پیاری آؤ' (ترجمہ)

ساتھیہ اکادمی کے جشن ادب کا آخری دن بچوں اور نوجوان ادیبوں کے نام رہا

کئی ادبی مقابلے کے علاوہ اشاعت کی موجودہ صورت حال پر پروگرام



(محمد عمران)

نئی دہلی، 29 فروری۔ ساتھیہ اکادمی کے

زیر اہتمام منعقدہ سالانہ جشن ادب 2020

کے چھٹا اور آخری دن بچوں اور نوجوان

ادیبوں کے نام رہا۔ بچوں کے لیے آج مختلف

ادبی پروگرام کا انعقاد کیا گیا جس میں نظم نگاری

کا مقابلہ، افسانہ نگاری کا مقابلہ، تصویر سازی کا

مقابلہ اور ادب اطفال کے ادیبوں کے ذریعہ

کہانیاں سنائے جیسے کئی تقریب ہوئے۔

بچوں کے لیے کہانی اور نظم نگاری کے

مقابلے کا موضوع 'ماحولیات' پر مرکوز تھا جسے

جونیئر اور سینئر گروپ میں بانٹا گیا تھا۔ مقابلے

میں مختلف اسکولوں سے آئے لگ بھگ 150

طالب علموں نے شرکت کی۔ یہ مقابلے

انگریزی اور ہندی زبانوں میں منعقد ہوئے۔

ہر گروپ میں اول، دوم اور سوم تین انعامات

بچوں کو دیے گئے۔ بچوں کو دینا اگر دال اور

دھوپنٹ نے انگریزی اور ہندی میں دلچسپ

کہانیاں بھی سنائیں۔ بچوں نے تصویر سازی

مقابلے میں بھی بڑھ چڑھ کر حصہ لیا۔

ہندوستان میں اشاعت کی موجودہ

صورت حال پر منعقدہ پینل گفتگو کا افتتاح پینل

بک ٹرسٹ کے چیئر مین گووند پرساد شرمانے

کیا۔ اپنے افتتاحی خطبے میں انھوں نے ادبی

کتبوں کی کھتی فروخت پر اپنی رنج کا اظہار

کرتے ہوئے کہا کہ کئی وجوہات سے ایسا ہو رہا

ہے لیکن اہم وجہ یہ ہے کہ ہم اسکولی سطح پر بچوں

میں ادب پڑھنے کا شوق پیدا نہیں کر پا رہے

ہیں۔ کتبوں کو عام لوگوں سے جوڑنے کا چیلنج

آج بہت اہم ہے۔ اس کے لیے ادیبوں کو بھی

آگے آکر قارئین کو کھوجنا ہوگا۔ ایک دیگر وجہ

میں انھوں نے کتبوں کی قیمت طے کرنے

کے عمل پر سوال اٹھائے۔ انھوں نے پبلشرز

سے درخواست کی کہ وہ کتاب کی اشاعت کو

پبلشرز سے مدد لی جائے تو اس میدان میں

آرہی گراؤٹ کو روکا جاسکتا ہے۔ انھوں نے

ہندستانی زبانوں کے تراجم کو زیادہ شائع

کرنے کی اپیل کی۔

انگلیشٹن معروف شاعر ارون کمال کی

صدارت میں منعقد ہوا جس میں آلوک

شریواستو اور ارندھتی سبرنیم نے شعری

تصانیف کی اشاعت کی موجودہ حالت پر بات

چیت کی۔ آلوک شریواستو نے شاعری کی

اہمیت پر بات کرتے ہوئے کہا کہ شاعری

زندگی کی ضرورت ہے اور وہ ہمیشہ بنی رہے

گی۔ ارون کمال نے صدارتی خطبے میں کہا کہ

شاعری پچھلے کچھ برسوں میں زیادہ جہوری

ہوئی ہے۔ کوئی بھی سماج نیکی تک زندہ رہے گا

جب تک اس کے لوگ شاعری کرتے رہیں

گے۔ انھوں نے ملیالم، مرنٹی اور بنگلہ میں

شاعری کی اچھی فروخت کا ذکر کرتے ہوئے کہا

کہ پنجابی، اردو اور اڑیہ میں شعری مجموعوں کی

فروخت کم ہوئی ہے۔

نئی فصل عنوان سے نوجوان ادیبوں کا

قومی کانفرنس کا انعقاد بھی عمل میں آیا جس کا

افتتاح معروف کٹر ادیب سدھانگیا نے کیا۔

آسامی ادیب دھرو جیوتی بورا نے مہمان

خصوصی کی حیثیت سے شرکت کی۔ کانفرنس

کے مختلف اجلاسوں کی صدارت کے پی رام

منی، گورہری داس، رام کمار کھوپا دھیانے،

پرکاش بھاتر بیک اور شین کاف نظام نے کی۔

ساتھیہ اکادمی کے سالانہ ادبی پروگرام

'جشن ادب' کو کامیاب بنانے میں اس کے

ملازمین کے شب و روز کی محنت شامل رہی۔

برہتی تعداد پر مسرت کا اظہار کرتے ہوئے کہا

کہ اب یہ صرف انگریزی سے نہیں بلکہ کئی

علاقائی زبانوں سے بھی کیا جا رہا ہے۔ انھوں

نے علاقائی زبانوں کے ادب کی تحریف کرتے

ہوئے کہا کہ پچھلے کچھ برسوں میں اچھا ادب

میں سے آیا ہے۔ وانی پرکاش کی نمائندگی

کر رہی آدیتی مہیشوری نے کہا کہ دوسری ملکوں

کی طرح ہمارے ملک میں بھی اس میدان میں

سرکاری امداد کی ضرورت ہے۔ انھوں نے

پبلشرز کے ذریعہ موٹی کمائی کرنے جیسے

الزاموں پر بات کرتے ہوئے کہا کہ یہ سراسر

غلط ہے۔ جی ایس ٹی کے چلتے پلٹنے

انڈسٹری بہت متاثر ہوا ہے۔ پرہتی شائے نے

کہا کہ ادیبوں کو بھی قارئین کی دلچسپی کو دھیان

میں رکھتے ہوئے کام کرنا چاہیے۔ اپنے

صدارتی خطبے میں نزل کاقتی بھٹا چاریہ نے کہا

کہ درسی کتب کی اشاعت میں بھی اگر ادبی

سماجی فلاح کے کام کے طور پر دیکھیں۔ اجلاس

کی ابتدا میں ساتھیہ اکادمی کے سکریٹری ڈاکٹر

کے شری نواس راؤ نے مہمانوں کا خیر مقدم کیا

اور کہا کہ ساتھیہ اکادمی 200 نئی کتابیں ہر سال

شائع کرتی ہے اور لگ بھگ 300 کتابوں کی

ری پرنٹ کرتی ہے لیکن ہم بھی کتابوں کی

فروخت میں لگتا رہوری گراؤٹ کو دیکھ رہے

ہیں۔ ہمیں اس چیلنج سے مل کر لڑنا ہے۔

پروگرام کے اگلے اجلاس کی صدارت

معروف انگریزی ادیب نزل کاقتی بھٹا چاریہ

نے کی اور کارجیکا دی کے، آدیتی مہیشوری،

پرہتی شائے اور پریتاست پتی نے حصہ لیا۔

کارجیکا دی کے نے کہا کہ نوجوان نسل کی

ادیت میں اب کتابیں نہیں ہیں۔ ہمیں نئے

ادیبوں کے ساتھ ساتھ نئے قاری کی بھی

ضرورت ہے اور اس کے لیے دونوں کے بیچ

گفت و شنید ضروری ہے۔ انھوں نے ترجمہ کی



साहित्योत्सव का अंतिम दिन रहा बच्चों की सृजनात्मकता के नाम

वीर अर्जुन संवाददाता
नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों एवं युवा लेखकों के नाम रहा। बच्चों के लिए आज विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों के अंतर्गत कविता-कहानी लेखन प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, बाल साहित्यकारों द्वारा बाल कहानियाँ सुनाने जैसे कई आयोजन किए गए।

बच्चों के लिए आयोजित कहानी एवं कविता प्रतियोगिता का विषय पर्यावरण पर केंद्रित था, जिसे जूनियर और सीनियर वर्गों में बांटा गया था। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से आए लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता अंग्रेजी एवं हिंदी भाषा में आयोजित की गई थी। प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार बच्चों को दिए गए। बच्चों को दीपा अग्रवाल एवं मधु पंत ने अंग्रेजी एवं हिंदी में रोचक कहानियाँ भी सुनाई। बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

भारत में प्रकाशन की स्थिति पर

आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद शर्मा ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने साहित्यिक पुस्तकों की घटती बिाी पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा कई कारणों से हो रहा है लेकिन प्रमुख कारण है कि हम विद्यालय स्तर पर बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि विकसित नहीं कर पा रहे हैं। पुस्तकों को आम जन जीवन से जोड़ने की चुनौती आज प्रमुख है। इसके लिए लेखकों को भी आगे आकर पाठकों को खोजना होगा। एक अन्य कारण में उन्होंने पुस्तकों के मूल्य निर्धारण की प्रणिया पर भी सवाल उठाए। उन्होंने प्रकाशकों से अनुरोध किया कि वे इसे पुस्तक प्रकाशन को समाज कल्याण की दृष्टि से देखें। सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी लगभग 200 नई पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित करती है और लगभग 300 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण करती है, लेकिन हम भी पुस्तकों की बिाी में लगातार गिरावट देख रहे हैं। हमें इस

चुनौती से मिलकर लड़ना होगा।

अगला सत्र निर्मल कांति भट्टाचारजी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ और उसमें कार्तिका वी.के. अदिति माहेश्वरी, प्रीति शिनाँय और पारमिता सत्वथी ने भाग लिया। कार्तिका वी.के. ने कथा साहित्य की वर्तमान प्रकाशन स्थिति पर बात करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी की प्राथमिकता में अब किताबें नहीं हैं। हमें नए लेखकों के साथ-साथ नए पाठकों की भी जरूरत है और इसके लिए दोनों के बीच एक संवाद जरूरी है। उन्होंने अनुवाद की बढ़ती संख्या पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि अब यह केवल अंग्रेजी से नहीं बल्कि कई क्षेत्रीय भाषाओं से किया जा रहा है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि इधर के वर्षों में अच्छा साहित्य विभिन्न भाषाभाषी क्षेत्रों से आया है। वाणी प्रकाशन का प्रतिनिधित्व कर रही अदिति माहेश्वरी ने कहा कि दूसरे देशों की तरह हमारे देश में भी इस क्षेत्र में सरकारी सहयोग की आवश्यकता है। जीएसटी के चलते प्रकाशन क्षेत्र प्रभावित हुआ है।